Vol. 2, No. 1 (January 2013) P. 1-3 Sangeet Galaxy
ISSN : 2319-9695

सम्पादक की कलम से.....

'नादाधीनं जगत्' अर्थात् सम्पूर्ण जगत् नाद अथवा ध्वनि के अधीन है। गागर में सागर समेटे हुए इस सूत्र में इतना विस्तार है कि इसकी व्याख्या में विज्ञान जगत् के ध्वनि से जुड़े गहन रहस्य, धर्म और ध्यान से जुड़ी विधियां और कला–संगीत जगत् के जाने कितने गूढ़ पहलू उजागर हो जाते है।

विज्ञान कहता है कि सम्पूर्ण ब्रह्मण्ड में पृथ्वी ग्रह के अतिरिक्त किसी अन्य ग्रह पर ध्वनि ऊर्जा के रूप में विद्यमान नही है। हमारा सारा जगत् ध्वनियों से भरा है। ध्वनि एक मूलभूत आधार है। ध्वनि से शब्द बनते है। शब्दों से विचार बनते है, विचारों से धर्म और दर्शनशास्त्र बनता है। लेकिन गहराई में ध्वनि ही है। इसलिये मन की बुनियादी संरचना में ध्वनि है। इसके ऊपर शब्द है, विचार है, धर्म और दर्शनशास्त्र है। जबकि इसके नीचे भाव है। जब संगीत साधक शब्दों से नाद में और नाद से उसके भाव में प्रवेश करता है तब वह बहुत आनंदपूर्ण संसार में गतिमान होता है और मन से दूर हट जाता है। अन्ततः जब वह भाव का भी त्याग कर देता है। तो वह मन के पार चला जाता है। चूंकि मन ही संसार है इसलिये वह संसार के बंधनों से मुक्त हो जाता है और अंत में शून्य में प्रवेश पा लेता है।

किसी विशेष ध्वनि का किसी विशेष भाव से जुड़े होने के कारण ही प्राचीन भारत में मंत्रों का विकास हुआ। प्रत्येक मंत्र कुछ विशिष्ट ध्वनियों का संकलन होता है। जिसके उच्चारण से एक विशेष भाव उत्पन्न होता है। कुछ मंत्रों के उच्चारण से मौन व शान्ति प्राप्त होती है तो कुछ के उच्चारण से व्यक्ति में मृत्यु की कामना तीव्र होने लगती है। प्राचीन काल में मंत्रों के द्वारा अनेक व्याधियों का उपचार किया जाता रहा है। अनेक संत, मुनि व तपस्वी उन मंत्रों के बल पर अपनी हृदय की गति व शरीर की अन्य क्रियाओं को नियंत्रण में रख पाते थे।

भगवान बुद्ध ने जो ध्यान की विधियां बताई उन विधियों में कुछ ध्वनि पर भी आधारित विधियां है। वे कहते है कि ध्यान के माध्यम से निर्ध्वनि में प्रवेश करो। बुद्ध की विवेचन विधि वेद, उपनिषदों आदि के सापेक्ष नकारात्मक है। इसलिये वे निर्ध्वनि शब्द का प्रयोग करते है। जबकि तंत्र विधायक है, विज्ञान भैरवतंत्र में विधायक शब्द का प्रयोग किया गया है। तंत्र सूत्र कहता है कि ''पूर्ण ध्वनि में प्रवेश करों'' संभव है कि निर्ध्वनि या पूर्ण ध्वनि का तात्पर्य 'अनहद नाद' से है, जो सदा सर्वदा से इस ब्रह्माण्ड में व्याप्त है।

संगीत के संदर्भ में देखे तो ज्ञात होता है कि ध्वनि ही संगीत की जननी है। बुनियादी रूप से संगीत का उपयोग ध्यान के लिये किया जाता था। भारतीय संगीत का विकास तो विशेष रूप से ध्यान

विधि के रूप में हुआ, वैसे ही भारतीय नृत्य विद्याओं का विकास भी ध्यान विधि के रूप में हुआ। संगीतज्ञ या नर्तक के लिये ही नही, श्रोता या दर्शक के लिये भी वे गहरे ध्यान के उपाय थे।

सभ्यता के विकास क्रम में मनुष्य विचार की दुनिया में ऐसा भटक गया कि अब वह केवल विचारों में जीता है। उसकी भाव की दुनिया, संवेदनशीलता और अनुभूति के जगत् पर केवल विचारों के बादल छाये हुए है। उसकी जीवन ऊर्जा उसकी निरन्तर विचार प्रक्रिया के कारण उसके सिर में केन्द्रित हो गयी है। संगीत के संदर्भ में भी इसके दुष्परिणाम दृष्टिगोचर होते है। आधुनिक समय में मनुष्य संगीत का उपयोग नशे की तरह करने लगा है। वह विश्राम के लिये आत्म विस्मरण के लिये उसका उपयोग करता है, यही दुर्भाग्य है कि जो विधियां जागरूकता के लिये, विकसित की गई थी, उनका उपयोग नींद के लिये किया जा रहा है। विज्ञान भैरव तंत्र, जो शिव और पार्वती के संवाद पर आधारित है, में आत्मरूपान्तरण की 112 विधियों का वर्णन है। उसमें 37 से लेकर 47वीं तक की 11 विधियों में ध्वनि के माध्यम से आत्म रूपान्तरण की प्रक्रिया को समझाया गया है।

प्राचीन भारत के मनीषियों ने 'शब्दब्रह्म' की खोजकर उसकी जो अवधारणा विकसित की, उसके मूल में भी नाद ही है। विज्ञान कहता है कि ध्वनि, विद्युत का सूक्ष्मतम रूप है लेकिन भारतीय मनीषी की पकड़ इसके भी आगे है। वह कहता है विद्युत भी ध्वनि का रूप है अर्थात् ध्वनि आधार है विद्युत नही। बहुत सम्भव है कि निकट भविष्य में विज्ञान को 'शब्दब्रह्म' की खोज कर भारतीय मनीषियों की अवधारणा को प्रमाणिकता प्रदान करनी पड़े।

ब्रह्म को अपने काव्य और संगीत से रिझाने वाले एक ऐसे ही नादयोगी थे – रवीन्द्रनाथ टैगोर। रवीन्द्रनाथ के गीतों में संगीत का स्पंदन स्वाभाविक रूप से मिलता है। रवीन्द्रनाथ द्वारा रचित रवीन्द्र संगीत में शास्त्रीयता का कुंदन सोना है तो लोक मानस के सच्चे मोती भी। रवीन्द्र संगीत में विशेषकर बंगाल के वैविध्यमूलक सांगीतिक धाराओं का समन्वय हुआ है। प्रस्तुत अंक में प्रो0 मंजू रानी सिंह का लेख "रवीन्द्रनाथ की संगीत चेतना" तथा डॉ0 दीपिका श्रीवास्तव का लेख "रवीन्द्र संगीत : एक शोधपरक अध्ययन" रवीन्द्र संगीत की विशेषताओं यथा, उसकी गायिकी, उसका काव्य सौन्दर्य, उसका ताल पक्ष आदि की शोधपरक जानकारी प्रस्तुत करता है।

संगीत विचारक व समीक्षक डॉ0 मुकेश गर्ग लोक संगीत व शास्त्रीय संगीत के पारस्परिक संबंधो पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं कि– लोक संगीत जब समृद्धि की पराकाष्ठा पर पहुँच जाता है तब उस में से कुछ सामान्य सिद्धांतो का संचयन करके उस संगीत के शास्त्र का निर्माण किया जाता है और तब लोक संगीत ही शास्त्र की उगुंली पकड़कर शास्त्रीय संगीत कहलाने लगता है। शास्त्रीय संगीत के प्रेरणा स्त्रोत व्यक्ति

एवं शास्त्र हैं तो लोक संगीत का प्रेरणा स्त्रोत जनमानस है। डॉ0 बीजू कुमार भगवती का लेख "राग संगीत और लोक संगीत में सम्बन्ध" लोक संगीत और शास्त्रीय संगीत का एक तुलनात्मक व तथ्यपरक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

भरतमुनि द्वारा रचित ग्रन्थ नाट्यास्त्र नाट्य कला के अतिरिक्त अनुषांगिक विषयों जैसे काव्य, संगीत, नृत्य, शिल्प तथा अन्य ललित कलाओं का भी कोष है। जिसके कारण यह अपनी विषयगत समग्रता से परिपूर्ण हैं। भरत ने अपने ग्रन्थ के 28 से 33वें अध्याय तक संगीत की विधाओं का विस्तृत विवेचन किया है तथा 33वां अध्याय अवनद्ध आतोद्य के रूप में लिखा है। डा0 अरुण रंजन मिश्र ने अपने शोधपत्र में नाट्य में वाद्यों के उचित प्रयोग पर प्रकाश डालते हुए उसकी उपयोगिता की विशिष्ट चर्चा की है।

और चलते – चलते.....

"चाह यही है कि अपने में, संचय ऐसी शक्ति करूं
मूर्छित मर्जित मनुज प्राण में, दिव्य अमर संगीत भरूं"

दिव्य अमर संगीत से हम सभी का जीवन गुंजायमान रहे। मंगलस्वरों के साथ नववर्ष की शुभकामनाएं!

डॉ0 अमित कुमार वर्मा